इनकी जिन्दगी आपका फैशन

संयोजन
डॉ. भरत जैन

प्रकाशक
धर्मोदय साहित्य प्रकाशन

- कृति : इनकी जिन्दगी आपका फैशन
- संयोजन : डॉ. भरत जैन
- संस्करण : प्रथम, अप्रैल, 2013
- आवृत्ति : 1100
- मूल्य : 15/-
- प्रकाशक : धर्मोदय साहित्य प्रकाशन

सुअर का स्वाद

सूअर के बाल उखाडने में भयंकर क्रूरता बरती जाती है। नाना प्रकार के उपयोग में इन बालों को लिया जाता है। परन्तु क्यों? क्या सूअर के बालों के बिना काम नहीं चलता? नगरों में सुअर के वध के दृश्य आसानी से देखे जा सकते हैं। जिन्दा सूअर को हाथ-पैर बांधकर आग की लपटों पर सेका जाता है। किसके लिये ?

सिर्फ स्वाद के लिये। कैसा क्रूर है यह स्वाद।

हजामत आपकी

गिनी पिग जैसे छोटे से जानवर की खाल को खरोंच कर आफ्टर शेव लोशन का लेप किया जाता है। परीक्षण के रूप में यह पता लगाया जाता है कि यह लोशन आदमियों के गाल पर कहीं फोड़े, खाज खुजली का रिएक्शन न कर दें। अत: गिनी पिग की खाल खरोंची जाती है। एक बार नहीं बार-बार अनेक गिनी-पिग जान से मारे जाते हैं। इस प्रकार आपके लिये आफ्टर शेव लोशन की खातिर।

हजाम आपकी और जान किसी जानवर की।

रेशम का कीड़ा

रेशम तो देखी है पहनी भी होगी रेशम का कीड़ा देखा है, रेशम का धागा प्राप्त करने में इसके कीड़े को जो मरणान्तक पीड़ा का सामना करना पड़ता है उसके बारे में कभी अन्दाज भी लगाया है रेशम के एक कुर्ते की खातिर कितने हजार कीड़ों की जीव हत्या होती है। किस पीड़ा से उन्हें मारा जाता है। रेशम का कीड़ा स्वयं अपने चारों ओर रेशम के धागे को जन्म देता हुआ एक ऐसी गुत्थी सी बना लेता है कि स्वयं उसमें बन्द हो जाता है। एक अवधि के बाद उस गुत्थी को तोड़कर यह कीड़ा बाहर निकल आता है परन्तु रेशम के कारोबार करने वाले तो कीड़े की जान पर सवार हैं। रेशम की गुत्थी को वे गरम पानी में उबालते हैं। कीड़ा मर जाता है। रेशम के तार धागे की तरह अलग हो जाते हैं। आपके रेशमी लिबास की खातिर कीड़ों का काम तमाम होता है। क्या आप ऐसे परिधान पहनकर प्रसन्न हैं-सन्तुष्ट हैं।

बिज्जू का सेन्ट

बिज्जू को सब जानते हैं। यह बिल्ली जैसा छोटा जानवर होता है। इसे भी मनुष्य ने अपना शौक पूरा करने के लिये मारना शुरु कर दिया है। सौन्दर्य-प्रसाधनों में इसका उपयोग होता है। इसे बेंतों से सूंता जाता है ताकि इस ताड़ना से उद्विग्न होकर उसकी यौन ग्रन्थि स्त्रवित हो, फिर इस स्त्राव को एक तेज धार वाले चाकू से बड़ी निर्ममता से खरोंच लिया जाता है। यह सुगंधित होता है, अतः कई तरह के सेंट बनाने के काम आता है। क्या जब आप इत्र-सेंट लगायें या सूँघते हैं तब आपकी पीठ पर उन बेंतों के दाग उभरते हैं, जो बिज्जू की पीठ को झेलने होते हैं? इस तरह हर वर्ष हजारों बिज्जू सेंट उत्पादन के लिये मार डाले जाते हैं।

और कछुए भी

पानी के किनारे कुछ ऊंचाई पर जमीन खोदकर कछुए अपना घर बना लेते हैं। जहाँ वे दुनियां से दूर छुप जाते हैं बेचारे कछुए को क्या पता? उनके पांव तले जमीन यकायक सरका दी जाती है। और वे इस प्रकार उल्टे लुढ़क जाते हैं कि सहसा सीधे नहीं हो पाते। उनके नीचे के शरीर के कोमल अंगों का तनिक धूप दिखाकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाता है। कारखानों में भेजकर इसमें से एक विशिष्ट तेल निकाला जाता है। जिसका उपयोग प्रसाधन सामग्री के रूप में किया जाता है। इस प्रकार कछुआ समुद्र तट से आपके कमरे में प्रसाधन सामग्री के रूप में पहुँच जाता है।

आपके सौन्दर्य के लिये कितने कछुओं की जान जाती है। प्रतिदिन प्रतिवर्ष।

बन्दर की लिपिस्टिक

दर्जनों बन्दरों को साथ बैठाकर उनके गले में ट्यूब के जरिये अनेक प्रकार के तरल पदार्थ पेट में पहुँचा दिये जाते हैं। वह ऐसे पदार्थ हैं जिन्हें बन्दर कभी नहीं खा सकता जैसे लिपिस्टिक टेलकम या बालों का खिजाब। इस परीक्षण से पता लगाया जाता है। कितनी खुराक खा चुकने पर बन्दर मर जायेंगे। ऐसा जहर पचाकर भी बच जाने वाले बन्दरों का पोस्टमार्टम किया जाता है। महज यह पता करने के लिये कि यह कैसे बच गये? दिन भर के इस प्रयोग के बाद सायं बन्दरों की लाशों को कूड़े की तरह फेंक दिया जाता है। अजीब तमाशा है। असंख्य बन्दर आदमी के हाथों ऐसी यातना पाते हैं।

हँसों आंसू मगरमच्छ के

लोग कहते हैं मगरमच्छ सदा मुँह खोलकर हँसता है लेकिन लोगों की हँसी ज्यादा क्रूर है। मगरमच्छ को पानी से बाहर चालाकी से लाया जाता है और उसे जल विहीन परिस्थिति में छटपटाने को मजबूर किया जाता है ताकि उसकी मौत करीब आती जाए। यकायक उसकी नाक में एक पैना छुरा घोंप दिया जाता है। ताकि उसका जीवन समाप्त हो जाए। उसकी खाल पर बहुत लोग आँख लगाये हुए हैं। क्योंकि उसका उपयोग चमड़े के रूप में महिलाओं के पर्स या सूटकेस आदि बनाने में किया जाता है। क्या मगरमच्छ आँसू बहाता है? कौन किस पर तरस खाता है।

भालू आया भालू आया

गली में भालू का नाच देखा है? क्या आपको पता है कि उस जानवर को यह नाच सिखाने में कितनी यातनाएँ दी जाती हैं? जंगल से पकड़ना भी आसान नहीं है। गड्ढा खोदकर उसमें जा गिरे भालू को लोहे की बेतों से पीटकर शान्त किया जाता है। उसकी नाक में छेद करके कड़ा पहनाया जाता है। गर्म तवे पर उसे खड़ा कर दिया जाता है। बार-बार वह कूदता है। इस प्रकार नाचना सीख जाता है। भालू वाले का पेट पालने के लिये बेचारे जानवर का कितनी यातना भुगतनी पड़ती है। इस जानवर की खाल के ओवरकोट बनाये जाते है। यदि लोगों को गर्म तवे पर नंगे पैर खड़ा किया जाये तो .....?

हिरण की दुर्दशा

कस्तूरी मृग को पकड़ने हेतु ऐसे क्रूर तरीके अपनाये जाते हैं, जिनकी कल्पना भी कठिन है। घास के अन्दर कटीले लोहे के ऐसे जाल बिछाये जाते हैं कि बेचारा हिरण सहसा यो गिरफ्त में आने पर छटपटाता है। लहुलुहान पैर को शिकंजे से निकालने की बराबर चेष्टा करता है। और सिसक कर प्राण त्याग देता है। कस्तूरी प्राप्त करने हेतु कस्तूरी मृग को गोली लगाकर भी उसके प्राणों का हरण कर लिया जाता है। अफ्रीका में सिवेट नामक पशु का तरंग पिंजरे में बन्द करके अधिक मात्रा में कस्तूरी प्राप्त करने हेतु उसके

शरीर को निरन्तर 15-20 दिनों तक क्रूरतापूर्वक अनेक प्रकार से पीड़ित करके उसको क्रोधित रखा जाता है। जब भयंकर क्रोध में आ जाता है तब उसका पेट चीरकर उसमें से कस्तूरी निकाल ली जाती है। उस रिक्त स्थान को मोम या मक्खन भरकर पेट सी दिया जाता है। एक दो माह यही प्रक्रिया अपना कर कस्तूरी निकाली जाती है। यह प्राणी जितना अधिक क्रोधित होता है। उतनी ही अधिक कस्तूरी प्राप्त होती है। कस्तूरी से अनेक दवाईयाँ व इत्र बनाये जाते हैं। हमारे नाशवान शरीर को पुष्ट बनाने व सजाने के लिये होता है। ऐसे लावण्यमयी जानवरों का ऐसी क्रूरता से वध करने का अधिकार आपको किसने दिया।

चीज.....छि.....छि.....

गाय दूध देती है। गाय के बछड़ा होता है। बछड़े के पेट में रेनट नामक पदार्थ पाया जाता है। रेनट प्राप्त करने के लिये बछड़े को मार दिया जाता है। ऐसा चीज अधिक जायकेदार माना जाता है। यद्यपि माइक्रोबायल रेनट भी काम में लाया जा सकता है। जो वनस्पति से बनता है। परन्तु यह तो स्वाद की बात है जिसकी खातिर नवजात बछड़ों का वध किया जाता है। यह वध रेनट की खातिर। आपकी जबान की जायके के लिये।

बछड़े की जिन्दगी और आपका जायका॥

गजराज तक गिरफ्त में

गजराज जैसे विशाल और शक्तिशाली जानवर तक लोगों ने नहीं छोड़ा। जगह-जगह ऐसे फल जंगल में बिखेर दिये जाते हैं। जिन पर विषैले रसायन का लेप पहले ही किया होता है। हाथी उन्हें खाते ही चित हो जाते हैं। आकाश में मंडराते हुए गिद्धों से अन्दाज लगाकर शिकारी वहाँ तक पहुँच जाते हैं। और उन हाथियों के दांत निकालकर बाजार तक ले जाते हैं। हाथियों के दाँत जिनसे बनती हैं अनेक चीजें हाथी दाँत की।

सांप से प्यार

यह कैसा प्यार है? साँप की खाल की खातिर असंख्य साँपों को पकड़ कर मार डाला जाता है। क्योंकि जिंदा खाल को खींचना सरल होता है, अतः जिंदा साँप की ही खाल उतार ली जाती है। साँप के सिर को कील से पेड़ के तने पर ठोंक दिया जाता है। जिंदा साँप तड़फता रहता है और चाकू की मदद से उसकी खाल जिंदा अवस्था में उतरती रहती है। काम तमाम कर चुकने पर शिकारी थकान दूर करते हुए आनन्द की फुँफकार करता है।

जहरीला अधिक कौन.....?

यह कैसा सौन्दर्य ?

उसकी आँखें बड़ी-बड़ी और गोल हैं। जैसे कोई तश्तरी है। नादान भाव उसके चेहरे से टपकते रहते हैं, परन्तु लोगों की क्रूर पिपासा के आगे इसकी नादान जिन्दगी कुछ नहीं है। स्लेन्डर-लेरिस नामक छोटा-सा बन्दर भारत में अब बहुत कम संख्या में रह गया है, क्योंकि इसका शिकार अत्यधिक किया जा चुका है। इसकी आँखें बाहर निकाल ली जाती हैं। इसका दिल बाहर निकाल लिया जाता है। इन दोनों को पीस कर सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री बनाई जाती है।

यह कैसा सौन्दर्य कितने ऐसे जानवरों की मौत से आपका चेहरा मुस्कराता है।

ह्वेल का क्या होगा ?

यह सर्वमान्य सत्य है कि ह्वेल मछली सर्वाधिक बुद्धिमान एवं चेतनशील होती है। इसके शरीर की रचना मानव शरीर जितनी जटिल होती है, परन्तु इसके विरुद्ध जारी लड़ाई में इन दोनों के बीच कोई समानता नहीं है। इस मछली का शिकार ऐसे हारपून ग्रिनेड की मदद से किया जाता है। जो इसके शरीर में आकर फटते हैं। इस मछली को मारना भी कई घण्टों का काम है। मरते समय इसके गले से एक विचित्र सी चीख निकलती है। लेकिन किसे परवाह है? इस मछली का शिकार समुद्र में जाकर जो इसका माँस चाहते हैं। कुछ देश तो इसके तेल का उपयोग मिसाइल के पुरजों को तर एवं कामयाब बनाने में भी लेते हैं। सील और डोल्फिन जैसे समुद्री जानवरों के साथ भी ऐसा व्यवहार होता है। किसी के सिर पर लगातार डंडे मारकर या किसी को जाल में समेट कर तट तक लाया जाता है। उनकी मुलायम खाल के लालच में शिकार जारी है।

खरगोश का क्या कसूर है ?

खरगोश की आँखें किसने फोड़ी। क्यों फोड़ी इस निरीह जानवर का सिर एक शिकंजे में जकड़ दिया जाता है। धातु के एक क्लिप से इसकी आँखें खुली रख दी जाती हैं। सिर धोने के शैम्पू की एक-एक बूँद इसकी आँख में टपकाई जाती है। खरगोश चीत्कार करने लगता है। इसकी आँखों में ऐसी तीखी जलन होती है कि वह शिकंजे से छुटकारा पाने के लिये अपनी कमर तक तुड़ा बैठता है। आँखों से अविरल आँसू निकलते रहते हैं। आँख से अन्धा हो जाने पर खरगोश शीघ्र मर जाता है। शैम्पू बनाने से पहले उसकी परख करने के लिये उसे खरगोश की आँखों में डाला जाता है। बेचारे जानवर की मौत और आपकी मौज। आपके बालों को मुलायम रखने के लिये कैसा क्रूर व्यवहार इस निरीह जानवर के साथ किया जाता है। खरगोश कितना प्यारा, स्नेहिल और भोला जीव है और मानव समाज.....

नादान कराकुल

मेमने तक को लोगों ने नहीं बक्शा है। कराकुल भेड़ के बाल बड़े घुँघराले और खाल अत्यन्त नरम होती है। मनचले लोग अपने शौक की पूर्ति की लिये इसी खाल के कपड़े या टोपी पहनना चाहते हैं। लेकिन मेमने के पैदा होते ही उसके बालों का मुलायमपना कम हो जाता है। अतः मादा भेड़ को गर्भावस्था में ही बेतों से पीटा जाता है। इस कदर बेतों से उस पर प्रहार किया जाता है कि उसके प्राण-पखेरु उड़ जाय। उसके मरते ही उसके पेट से होने वाले मेमने को निकाला जाता है। क्रूरता की पाशविकता इससे अधिक क्या होगी कि उस मेमने की खाल जिन्दा अवस्था में ही उतार ली जाती है। उसके मरने तक इंतजार नहीं किया जाता।

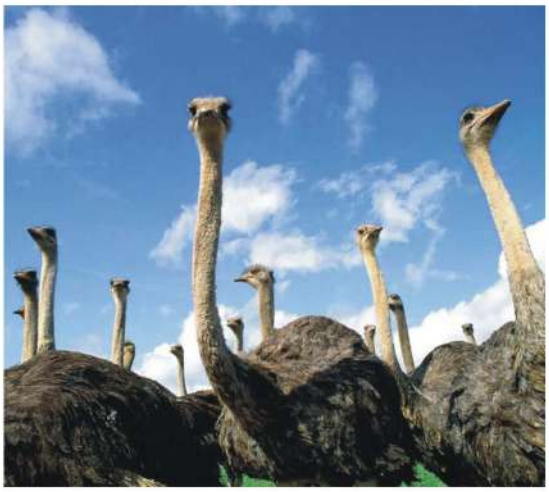

शुतुरमुर्ग का थैला

हर छठे माह शुतुरमुर्ग के पंख नोचे जाते हैं क्योंकि लोगों को इस विशालतम पक्षी के पंखों से प्यार है। पंख नोच लिये जाने के बाद इसकी खाल नोची जाती है। खरोंचने और नोंचने का यह क्रम तब तक चलता है,जब तक कि शुतुरमुर्ग के प्राण-पखेरु उड़ न जाये। खाल का थैला बन जाता है और पंख आपके टोप में खोंस लिये जाते हैं।

कैसी है यह शुतुरमुर्ग चाल समाज की.....

कितने बीवरों की खाल से बना है आपका कोट

चूहे जैसा ही जानवर होता है बीवर। इसके शरीर से निकला तेल सौन्दर्य-प्रसाधन सामग्री बनाने में काम आता है। इसकी खाल से कोट बनते हैं। छोटा-सा यह जानवर रुमाल बराबर है। करीब 60 ऐसे जानवरों की खाल से एक व्यक्ति का कोट बनता है। कितना व्यापक वध है यह।